IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Impact Factor: 4.819
Volume 10, Issue 1, October 2019

e/;dky esa fgUnw&eqfLye ,drk dk Lo:Ik

M,- mn;Hkku ;kno
vflLVsaV izksQslj] fgUnh
राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

भारत वर्ष की विशेषता रही है, कि जितने भी आक्रमणकारी इस देश में आये, उन्हें वह अपने समाज में खपाने की कोई न कोई राह निकाल लेता था। मुसलमानों के पूर्व जितने भी विदेशी आक्रमणकारियों ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया, उन सबको हिन्दू धर्म ने आत्मसात कर लिया। भारतवर्ष पर मुसलमानों की विजय एक राजनीतिक विजय थी। काफी प्रयास के बावजूद मुसलमान यहाँ की सामाजिक व्यवस्था पर अधिकार प्राप्त करने में असफल रहे। परन्तु इस समाज में एक ऐसा वर्ग था, जो अपनी रचनाओं और उपदेशों के माध्यम से हिन्दुओं और मुलसमानों के बीच की खाई को पाटने का प्रयास कर रहा था। इन लोगों ने दोनों सम्प्रदायों के बीच की दूरी को समाप्त करने का अथक प्रयास किया। इन लोगों में अमीर खुसरो का नाम सबसे महत्वपूर्ण है।

vehj [kqljks ¼1253& 1325bZ0½

उदारपंथियों में अमीर खुसरो का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। अमीर खुसरो शासक वर्ग के थे, परन्तु उनमें साम्प्रदायिक कट्टरता तनिक भी न थी। मनुष्यता ही उनके लिए सबसे बड़ी चीज थी। हिन्दुओं और मुसलमानों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए इन्होने अथक प्रयास किया। अपनी रचनाओं के माध्यम से अमीर खुसरो हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रथम उन्नायक के रूप में सामने आते है।

काफिरे इश्क इश्कम मुसलमानी मरा दरकार नीस्त।
हर रंगे मनतारे गश्ता हाजते जुन्नर नीस्त।।

(मैं प्रेम का काफिर हूँ। मुझे मुसलमानों की जरूरत नहीं। मेरी एक–एक राग तार बन गई है, जनेऊ नहीं चाहिए मुझे।)

उस समय मुसलमान अपनी कवितायें फारसी भाषा में लिखते थे और हिन्दू अपना साहित्य डिंगल अथवा अपभ्रन्श में। दोनों वर्ग यह जानता था कि फारसी और डिंगल सामान्य जनता की भाषा नहीं है, फिर जातीय आधार पर उन्हीं भाषाओं पर दोनो वर्ग आसक्त थे। खुसरो ने इस कमी को दूर करने के लिए तथा हिन्दुओं के नजदीक पहुँचने के लिए दिल्ली के आस पास प्रचलित खड़ी बोली में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। खुसरो की भाषा में एक तरफ खड़ी बोली फारसी के शब्द मिलते हैं तो दूसरी तरफ संस्कृत के तत्मम् शब्द।

''शबाने हिज्रां दराज चूँ जुल्फ व रोजे वसलत चूँ उम्र कोतह।
सखी! पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अंधेरी रतियाँ।।

इनकी इसी प्रवृति को देखकर रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है– ''अमीर खुसरो बड़े ही बुद्धिवादी जिन्दादिल और असम्प्रदायिक मुसलमान थे।.... हिन्दुओ के धार्मिक स्वभाव को उन्होंने मुसलमानों के लिए अनुकरणीय कहा है। प्रतिमा पूजा का समर्थन तो वे भला कैसे करते, किन्तु प्रतिमा पूजने वालों में उन्होंने जो तल्लीनता देखी, उसकी भी उन्होंने तारीफ की है। इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि तीर का लक्ष्य भले ही ठीक न हो, मगर उसमें गति कितनी तेज है।[1]

अमीर खुसरो के इस कार्य को आगे के भी संतो ने आगे बढ़ाया तथा साहित्य की सार्थकता को एक पहचान दी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2019
Impact Factor: 4.819

मध्यकालीन संत जाति पांति की सीमा से मुक्त थे। इन संतो का योगदान उस समय हुआ, जब भविष्य समाज में धर्म के नाम पर सड़ी–गली परंपराओं और अनेकानेक रूढ़ियों का पोषण हो रहा था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों में घृणा का भाव था, ये दोनो अपने–अपने धर्म के संस्कारों के प्रति कट्टर होते जा रहे थे। इन लोगों के सामने बड़ी समस्या थी कि कैसे मानव मात्र में सौहार्द स्थापित हो सके। डॉ0 रामविलास शर्मा के शब्दो में ''संत साहित्य में मानव मात्र की समानता की भावना एक मूल सूत्र की तरह विद्यमान है। उनके प्रभाव से विभिन्न धर्मो, जातियों और वर्णो में बँटे हुए समाज की निर्धन जनता यह विश्वास प्रकट किए बिना न रह सकी कि सभी मनुष्य भाई–भाई है''।[2] इन संत कवियों में विशेष रूप से कबीर, नानक, और शेख फरीद का नाम उल्लेखनीय हैं।

dchj ¼1397&1418b0½&

कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों को समझाया कि मन्दिर और मस्जिद के नाम पर मरना एक मूर्खता है। कबीर ने साम्प्रदायिक विद्वेष, जाति पांति, रूढ़ियों, वाह्याडम्बरों और संकीर्णताओं पर जमकर प्रहार किया। डॉ0 ईश्वरी प्रसाद के अनुसार– ''वर्तमान जाति पाँति विरोधी कोई भी व्यक्ति इतने उत्साह और कट्टरता से उसका खंडन नहीं कर सकता, जितना कि महात्मा कबीर दास ने किया है। उनकी दृष्टि से ईश्वर को प्राप्त करनें में जाति कोई बाधा नहीं पहुँचा सकती। पूजा के वाह्य कर्मकाण्डों का उनके लिये कोई महत्व न था''[3]

ईश्वर को राम और रहीम के घेरे से निकालकर कबीर ने स्पष्ट कहा कि हिन्दू और इस्लाम दोनो अधूरे धर्म है, राम और रहीम को एक न मानना निरामूर्खता की बात है। अर्थात राम और रहीम एक ही है।

हिन्दू कहत है, राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोउ लड़े मरत हैं, भेद न कोई जाना।

कबीर कहते है कि ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, उसे मंदिर और मस्जिद की सीमा में बाँधना विवेकहीनता का प्रमाण है। आखिर जहाँ मंदिर और मस्जिद नहीं है क्या वहाँ ईश्वर नहीं रहता या वह जगह किसके अधीन है।

तुरक मसीत देहुरे हिन्दू ढीठा राम खुदाई।
जहाँ मसीत देहरा नहीं तहं काकी ठकुराई।।

तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेकानेक रूढ़ियों पर प्रहार करके कबीर दास ने हिन्दुओं और मुसलमानों को एकता की राह पर लाने का प्रयास किया। हिंसा के लिए वे मुसलमानों को बराबर फटकारते रहे।

दिन भर रोजा रहत हैं, राति हनत है गाय।
यह तो खूब वह बंदगी, कैसी खुदी खोदाय।।

कबीर दास का इच्छित समाज हर प्रकार की रूढ़ियों और आडम्बरों को महत्व नहीं देता। इस प्रकार हम देखते हैं कि दोनों धर्मों की त्रुटियों को दूर करके, समाज को सही दिशा प्रदान करने एवं लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए कबीर दास निरन्तर प्रयत्नशील रहे। उनके उपदेशों का सामान्य जनजीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा और हिन्दू–मुसलमान करीब आए।

ukud&

नानक सिक्ख धर्म के आदि गुरू थे। इन्होनें हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मो की अच्छाइयों को लेकर नया धर्म प्रवर्तित किया जो सिक्ख धर्म के नाम से प्रसिद्व हुआ। नानक अवतारवाद, मूर्तिपूजा तथा जाति–पाँति के भेद–भाव को नहीं मानते थे।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2019
Impact Factor: 4.819

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार ''तत्कालीन संत धारा के अनुसार गुरूनानक भी निराकार वादी थे। वे अवतारवाद जाति–पाँति और मूर्तिपूजा को नहीं मानते थे। उनका मत एक ओर जहाँ वेदान्त पर आधारित है, वही दूसरी ओर तवस्सुफ के भी अनेक लक्षण लिए हुए हैं। विशेषतः ज्ञानखण्ड, गुरूनानक के उपासना के चारो अंग (सखखण्ड, ज्ञानखण्ड, करमखण्ड और सचखण्ड) सूफियों के चार मुकामात (शरीअत, मारफत, उकबा और लाहूत) से निकले हैं।''[4]

सामाजिक एकता के लिए कबीर की तरह से नानक ने भी रूढ़ियो और परम्पराओं का खण्डन किया, ईश्वर और मनुष्य की एकता तथा अन्तः साधना पर बल दिया। इन्होंने सभी धर्म के लोगों को अपना शिष्य बनाया। ''नानक का व्यवहार अपने विचारों पर दृढ़ रहते हुए भी सभी के साथ प्रेम नम्रता और समानता का होता था। जाति पाँति का कोई भेद न करके वे सबको शिष्य बनाते थे। और एक साथ रहने वाले सभी सिक्ख एक मत में नत्थी न कर लिए जाय, जिससे दूसरे विरोधी समझे जाय, इसलिए वे अपना वंश ऐसा मिला जुला हुआ रखते थे कि इन्हे देखकर यह पहचान करना कठिन होता था, कि वे हिन्दू हैं या मुसलमान।।''[5] सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों पर चोट करके इन्होंने समाज को एक सही मार्गदर्शन दिया। नानक की चोटें कबीर की तरह विस्फोटक नहीं है, बल्कि उनमें एक मृदुता है, जो आत्मान्वेषण के लिए प्रेरित करती है।

'k[k Qjhn&

संत शेख फरीद पंजाब के रहने वाले थे। ये जन्मना मुसलमान थे और शासक जाति के होते हुए भी साम्प्रदायिक अहंभाव से बहुत दूर थे। इन्होंने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दुओं और मुसलमानो में व्याप्त कटुता की भावना को समाप्त करने का प्रशंसनीय प्रयास किया। वे पूर्ण रूपेण कबीर और नानक की परम्परा के पोषक थे।

स्पष्ट है कि संत कवियों ने अपनी रचनाओं एवं उपदेशों के माध्यम से हिन्दुओं और मुसलमानों को प्रभावित किया तथा एकता के सूत्र में बाँधा।

lfQ;k dk ;kxnku&

यद्यपि सूफियों का आगमन इस्लाम के साथ हुआ, परन्तु सूफी काव्य साहित्य का उदय इस्लाम के आगमन के पश्चात हुआ। इसमें प्रमुख रूप से चार सम्प्रदाय दिखाई देते हैं।

(1) चिश्तिया सम्प्रदाय
(2) सुहरावर्दिया सम्प्रदाय
(3) कादिरिया सम्प्रदाय
(4) नक्सबंदिया सम्प्रदाय

सूफी ने शासकों तथा मुसलमानो के नियंत्रण को स्वीकार नहीं किया। सूफी संतो ने शासक वर्ग की नीतियों से अपने को स्वतंत्र रखा। फलस्वरूप शासक वर्ग एवं मुल्लाओं ने सूफियों का विरोध किया। रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार– ''सूफी निर्मुक्त चिन्तक थे और उनका उद्देश्य लोगों को डाल से उतार कर मूल की ओर ले जाना था। वे मनुष्यों को यह शिक्षा देते थे कि, धर्म के बाहरी अनुष्ठानों से उतरकर नीचे देखो, सभी धर्म एक हैं और एक ही धर्म, मूल से ऊपर अनेक डालियाँ बनकर बिखर गया है। सच्चा धर्म अलग–अलग डालों पर बैठकर कोलाहल मचाने में नहीं, बल्कि मूल पर पहुँचकर शांत हो जाने में है। धर्म कोलाहल नहीं शांति हैं, धर्म विवाद नहीं नीरवता है, धर्म युद्व नहीं मैत्री और प्रेम है।[6]

सूफी संत सरल स्वभाव के थे, वे मानवता में विश्वास रखते थे उनकी सोच उदार थी इसलिए वे हिन्दू और मुसलमान समाज को समान रूप से प्रभावित करना चाहते थे। हिन्दू और मुसलमान दोनों के बीच की खाई को वे पाटना चाहते थे। आचार्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2019
Impact Factor: 4.819

राम चन्द्र शुक्ल के अनुसार– ''प्रेम स्वरूप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेद भाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।[7]

सूफी कवियों ने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को साम्प्रदायिक भावना से स्वयं को उपर रखा। इन सूफी सन्तों ने वेद पुराण और कुरान में कोई अंतर नहीं माना। वे समान रूप से दोनों पर विश्वास करते थे सही अर्थो में मानवता के पोषक थे। इन लोगों ने दोनों तरफ के झगड़े को समाप्त करने की कोशिश की वे चाहते थे कि भारतीय संस्कृति एक मिली–जुली संस्कृति से निर्मित हो कहीं पर विभाजन न दिखे। मानवता की पोषक बातें दोनो धर्मों में कही, गयी हैं इसलिए कोई एक धर्म महान नहीं हो सकता। उसे महान तो तहजीब एवं संस्कृति बनाती है तथा वहाँ के रहने लोग बनाते हैं।

इस समय एकता केवल कला, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में हो नही मिलती, बल्कि वो राजनीति के क्षेत्र में भी मिलती है। उस समय के शासको में हिन्दू–मुस्लिम एकता के संदर्भ में अकबर का नाम सर्वप्रमुख है। उस समय मुगलों और पठानों के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे इसलिए, मुगल शासकों ने हिन्दुओं की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया। हुमायूँ ने अकबर के लिए वसीयत की थी कि, ''हो सके तो राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके उनके साथ अपनी मित्रता पक्की कर लेना।''[8] अकबर ने हिन्दुओं के उन समस्त अधिकारों को पुनः प्रदान किया, जिनको उसके पूर्ववर्ती शासकों ने छीना था। हिन्दुओं पर से ''जजियाकर'', ''तीर्थयात्रा'' कर तथा उन समस्त करो को हटा दिया गया, जिनका भुगतान गैर मुसिलम होने के कारण करना पड़ता था। अकबर के शासन काल में जबर्दस्ती होने वाले धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दिया गया। हिन्दुओं को उच्च पदों पर नियुक्त किया गया। अकबर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच के भेद को मिटाकर हिन्दुओं को भी उच्च पदों पर नियुक्त किया। अकबर सभी धर्मों को मिलाकर एक नए धर्म की स्थापना करना चाहता था। अकबर ने लिखा है– ''एक साम्राज्य में जिसका शासन हो, यह अच्छा नहीं है कि प्रजा एक दूसरे के विरोधी मतों में बँटी रहे। इसलिए हमें उन सबको मिलाकर एक करना चाहिए किन्तु, इस प्रकार कि वे एक भी हो जाँय और अनेक भी बने रहें।''[9]

अकबर मानवता का पोषक था तथा वह अधिकतर जन समूह द्वारा पसन्द किया जाता था। वह एक लोकप्रिय शासक था। सभी धर्मों से प्रभावित होकर उसने अपने दरबार में एक नए धर्म ''दीन ए इलाही'' धर्म का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। इस नए धर्म के अनुकर्ता हिन्दू और मुसलमान दोनों हुए। ''दीन–ए–इलाही'' के सम्बन्ध में इतिहासकार को0अ0 अंतोनोवा ने लिखा है– ''दीन–ए–इलाही में अकबर की दृष्टि में भारत के सभी मुख्य धर्मों के उचित तत्वों का समावेश था। इस नए धर्म का सर्व प्रमुख तत्व था ''दीन परस्त'' बादशाह के नाते अकबर को ''महिमामंडित'' करता, जो ''महदीपंथी'' विचारों से मेल रखता था और कुछ हिन्दू तथा किसी हद तक मुस्लिम भी कर्मकाण्ड और पौराणिक विश्वासों का अस्वीकरण करना।''[10] इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अकबर अगर महान कहा गया तो उसके पीछे एक बड़ा कारण था, अकबर का धर्म के क्षेत्र में सौहार्द स्थापित करना।

अकबर की यह नीति काफी हद तक सफल रही परन्तु इसका हर क्षेत्र में स्वागत नहीं हुआ। उच्च वर्ग के हिन्दू अकबर को मुसलमान समझते रहे तथा उच्च वर्ग के मुस्लिम उसके खिलाफ खड़े हो गए। लेकिन यह अवश्य था कि निचले वर्ग के हिन्दुओं और मुलसमानों का उसे पूर्ण समर्थन प्राप्त रहा। अकबर ने पूरे भारत को एकता के सूत्र में बाँधा। सांस्कृतिक एकता का मार्ग भी उसी ने प्रशस्त किया। जिसे साहित्य, कला एवं संस्कृति में देखा जा सकता है।

परन्तु अकबर के पश्चात शासकों का झुकाव इस्लाम की तरफ बढ़ता गया। अकबर के बाद जहाँगीर ने अकबर की नीति में परिवर्तन करते हुए इस्लाम की तरफ झुका। इसके बाद शाहजहाँ इससे भी आगे बढ़कर आदर्श इस्लामी शासको की

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2019
Impact Factor: 4.819

तरह कार्य किया। शाहजहाँ के बाद दाराशिकोह और औरंगजेब की नीति परस्पर विरोधी रही। एक मानवता का पोषक था तो दूसरा धर्म का। यदि दाराशिकोह के हाथ में सत्ता होती तो भारत का रूप कुछ और होता परन्तु सत्ता इस्लाम परस्त औरंगजेब के हाथों में गयी। इसका प्रभाव आम जनता पर पड़ा, इस्लाम की पक्षधरता का उसे बाद में एहसास हुआ। उसने अपने द्वितीय पुत्र आज़म को लिखे गये पत्र में उसने स्वीकार किया था कि ''मैं सल्तनत की सच्ची हुकूमत और किसानों की भलाई एकदम नहीं कर सका हूँ। इतनी बेशकीमती जिन्दगी बेकार गयी।''[11]

अन्ततः औरंगजेब को यह बात समझ में आ ही गयी कि शासन करने के लिए धर्म नहीं मानवता का पोषक होना चाहिए परन्तु, अब तो समय निकल गया था। संतो की नीति को मुल्लाओं और पंडितों ने तथा अकबर की नीति को औरंगजेब ने निष्फल कर दिया। और हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की खाई बढ़ती ही गयी।

- रामधारी सिंह ''दिनकर–संस्कृति के चार अध्याय, पृ0– 327
- ''पाटल'' (संत–साहित्य परिशिष्टांक) पृ0 24–25
- डॉ0 ईश्वरी प्रसाद– मध्ययुग का संक्षिप्त इतिहास पृ0– 261
- रामधारी सिंह ''दिनकर'' – संस्कृति के चार अध्याय– पृ0– 397
- परशुराम चतुर्वेदी (संपा0)– हिन्दी साहित्य का इतिहास, चतुर्थ भाग पृ0– 155
- रामधारी सिंह ''दिनकर''– संस्कृति के चार अध्याय– पृ0– 328
- डॉ0 हरवंश लाल शर्मा व शेखर शर्मा– हिन्दी साहित्य का इतिहास (भक्तिकाल) पृ0–63
- रामधारी सिंह दिनकर– संस्कृति के चार अध्याय– पृ0– 385
- रामधारी सिंह दिनकर– संस्कृति के चार अध्याय– पृ0– 386
- को0अ0 अंतोनोवा– भारत का इतिहास पृ0– 316
- डॉ0 ताराचन्द्र– भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास प्र0– 52